बागवानी

बिजाई, उगाई और कटाई के तरीके

बागवानी
बिजाई, उगाई और कटाई के तरीके

वनस्त्री

संकलन और पाठ
मनोरमा जोशी
सुनीता राव

चित्रण
सुषमा दुर्वे

संकल्पना
अपर्णा चिवुकुला
मंजूषा मुथैया

ग्राफिक डिजाइन
बिपिन बिहारी नायक

हिन्दी अनुवाद
डेसर्ट रिसोर्स सेन्टर
उरमुल ट्रस्ट, राजस्थान

vanastree.org
urmul.org

हिंदी संस्करण | 2018

ORACLE

इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद और मुद्रण ओरेकल के सामाजिक सरोकार, विश्वास और आर्थिक मदद से संभव हो पाया है|

creative commons

This work is licensed under the Creative Commons Attribution-NonCommercial-NoDerivs 3.0 Unported License. To view a copy of this license, Visit http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/3.0/deed.en_US.

देश की माटी, देश का जल
हवा देश की, देश के फल
सरस बनें, प्रभु सरस बनें!

देश के घर और देश के घाट
देश के वन और देश के बाट
सरल बनें, प्रभु सरल बनें !

देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई-बहन
विमल बनें प्रभु विमल बनें!

रवीन्द्र नाथ टैगोर
कविता का रूपांतर
भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा

प्रिय किसान साथियों,

अपने घर के बगीचे व खेत में तरकारियों (सब्ज़ियों) की पारंपरिक खेती करने का काम बरसों से किया जा रहा है। महिला किसानों की इसमें विशेष भूमिका होती है। उनमें इसे करने का स्वाभाविक कौशल है। वे न सिर्फ अपनी बाड़ी (घर के पास की जगह) में यह काम करती हैं, बल्कि आसपास के गाँवों व शहरी इलाकों में इसका प्रचार करती हैं, उन्हें यह करने को प्रेरित करती हैं।

अपने घर में फल और सब्ज़ी लगाने और उगाने के लिए सचित्र पुस्तिका (मार्गदर्शिका) को लाकर हमें बहुत खुशी हो रही है। इस पुस्तिका में सब्ज़ियों, कंद और फूलों से जुड़े कई सवालों के जवाब हैं, जो हमें अनुभवी किसान व उद्यान विशेषज्ञों से मिले हैं। इसे प्रकाशित करने का उद्देश्य है कि आप सब देशी बीजों की बागवानी सीखें और देशी बीजों की जानकारी प्राप्त करें। इसे अपनाएं और अपने पोषण, आजीविका और खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करें।

इस पुस्तिका में सब्ज़ियों, कंद और फूलों की कुल 38 प्रजाति का पूरा वानस्पतिक चित्रण किया गया है। कंद वाले हिस्से का अध्ययन करते हुए आपको उपयोगी, किन्तु भुला दी गई सब्ज़ियों का स्मरण होगा। साथ ही इसे फिर उगाने की प्रेरणा मिलेगी।

बाग उगाओ, भविष्य बनाओ !

वनस्त्री टीम
उरमुल टीम

विषय-सूची

सब्ज़ियां

चौलाई 11
बीन्स 12
बाकला (30 दिन वाली फली) 12
लंबी सेम (अंगीकेस) 13
सेम (लाइमा बीन्स) 14
सेम (विंग्ड बीन्स) 15
सेम (ह्यासिंथ बीन्स) 16
बैंगन 17
खीरा 18
मैगे 18
स्पाइनी 19
येरे 20
मिर्च 21
लौकी 22
पेठा (कुम्हड़ा) 22
करेला 23
लौकी 24
कद्दू 25
तुरई (तोरई) 26
घिया तुरई 27
भिंडी 28
कुलफा 29
पोई (पालक) 30
टमाटर 31

कंद

अरारोट 33
अरबी 34
रतालू (एलीफैंट फुट याम) 35
अदरक 36
आम हल्दी (मैंगो जिंजर) 37
शकरकंद 38
कंडा/कसावा 39
हल्दी 40
खमालू (डायसकोरिया आलता) 41
गराडूय अथवा गैठी (डायसकोरिया बल्बीफेरा) 42

फूल

गुल मेहेंदी-तिउरी (बालसम) 44
अपराजिता 45
केली-वैजयंति 46
कॉसमॉस 47
गुल अब्बास 48
गेंदा 49
जिन्निया 50

सामान्य जानकारी

- मुक्त-परागण करने वाले बीजों को और ज़मीन के अंदर होने वाले कंद को जैविक तरीके से कब और कैसे लगाऐं
- रोपाई की जानकारी
- फसल कटाई

संकरण (Hybridization) क्या है?

संकरण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें दो पौधों को मिलाकर एक नई नस्ल तैयार की जाती है।

प्राकृतिक संकरण के ज़रिए मूल प्रजाति को कई उपजातियों में बांटा जाता है। यह कई पीढ़ियों तक उत्पन्न होने और प्रजाति को बनाए रखने में मददगार होते हैं। आधुनिक संकरण में खास मकसद से पौधों के गुणों की अदला-बदली की जाती है। किसी प्रजाति में खास तौर से उसके गुणों को बढ़ाने और उसमें सुधार के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसका चुनाव एक नस्ल की कई प्रजातियों के ज़रिए किया जाता है।

अब बीज कंपनियां इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करने लगी हैं, जिसका उद्देश्य होता है कि नई बीजों के अधिकार उनके पास रहें, जिससे उनका बाज़ार पर एकाधिकार रहे।

इस प्रक्रिया से तैयार बीज भविष्य में इस्तेमाल के योग्य और पैदा होने लायक नहीं रह जाते हैं। आधुनिक संकरित बीज को अगले साल हेतु सुरक्षित नहीं रखा जा सकता और ना ही उगाया जा सकता है। इस तरह किसान और बाग लगाने वालों को हर साल बीज कंपनियों से ऊंचे दाम पर नए बीज खरीदने पड़ते हैं।

स्वयं-परागित बीज क्या हैं?

स्वयं-परागित बीज, पारंपरिक नस्ल के बीज होते हैं, जिसे किसान खुले और प्राकृतिक वातावरण में विकसित करता है। इन बीजों को कई साल संभाल कर रखा जा सकता है। ये सुरक्षित होते हैं, इन्हें उगाया जा सकता है और कोई भी इसे पुर्नउत्पादित कर सकता है। इस प्रकार ये किसानों और बागबानों को बीज कंपनियों से स्वतंत्रता प्रदान करते है।

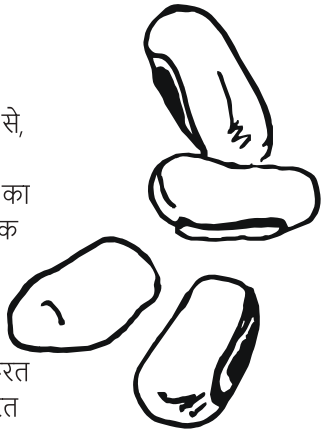

जैविक बीज क्या हैं?

जैविक बीज स्वस्थ तरीके से भूमि पर उगाए जाते हैं। इन्हें प्राकृतिक तरीकों से, जैसे देसी खाद (गोबर खाद) और घास-पात के जरिए तैयार किया जाता है। इनके उत्पादन में किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता। इसके अलावा, जैविक किस्म के बीज आनुवांशिक रूप से संशोधित नहीं होते हैं।

लताएं और झाड़ीदार पौधे क्या हैं?

लताओं (बेल) वाले पौधे, ऐसे पौधे होते हैं जिन्हें बढ़ने के लिए सहारे की ज़रूरत होती है। झाड़ीदार पौधे आकार में छोटे होते हैं। इन्हें किसी सहारे की ज़रूरत नहीं होती है।

'स्व-बीजण' (सेल्फ सीडिंग) क्या है?

'स्व-बीजण' की प्रक्रिया में पौधे का बीज अपने आप बिखर जाता है, इन बिखरे हुए बीज से उगने वाले नए पौधे मुख्य पौधे के आस-पास ही होते हैं। ऐसे में इन बीजों को बागबानी करने वाले के लिए फिर से लगाने की ज़रूरत नहीं होती है। कॉसमॉस स्व-बीजण पौधे का अच्छा उदाहरण है।

रोपाई क्या है?

रोपाई एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह रोपते (लगाते) हैं। छोटे बीज जैसे पारिजात पुष्प (सदाबहार फूल), बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च और टमाटर के बीज को सबसे पहले छोटी क्यारी या फिर ट्रे में (नर्सरी) लगाते हैं और कुछ अंतराल के बाद जब वह थोड़ा बड़ा हो जाता है तब उसे दूसरी जगह रोपते हैं। रोपाई तभी की जानी चाहिए जब अंकुरण के बाद पौधा उगने लगे और उसमें 2-4 पत्तियां उग जाएं। बड़े बीज जैसे बीन्स, भिंडी, लौकी, खीरा और कद्दू आदि को सीधे ही बोया जाता है। रोपाई करते समय जड़ों को नुकसान नहीं पहुंचे, यह सावधानी रखना ज़रूरी है।

पलवार अथवा घास-पात से ढंकना (मल्चिंग) क्या है?

पलवार (मल्चिंग) में फसलों के बेकार, पुआल, भूसी, सूखी पत्तियों एवं अन्य जैविक तत्वों का प्रयोग खुली ज़मीन को ढकने के लिए किया जाता है। यह मिट्टी में पोषक तत्वों के क्षरण को नियंत्रित करती है, तथा नमी को बनाए रखने के साथ ही ज़मीन की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाती है।

पौधों को कितने पानी की ज़रूरत होती है?

बीज बोने के कुछ समय बाद जब अंकुरण हो जाए तो सावधानीपूर्वक सिंचाई करनी होती है। नियमित सिंचाई से पौधे मुरझाते नहीं हैं। घास-पात से ढकने के कारण नमी बनी रहती है। सभी पौधों की अपनी एक खास ज़रूरत होती है। गर्मियों में ज्यादा पानी देने की ज़रूरत होती है। पर बहुत पानी भी फसल और ज़मीन को नुकसान करता है।

बीज को कैसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए?

बीज को ठंडे, सूखे, और अंधेरी जगह पर रखा जाना चाहिए। खास तौर से हवा-बंद डब्बे में रखना ज़्यादा सुरक्षित होता है। बीज भंडारण से पहले प्राकृतिक तरीकों से उपचार भी किया जाना चाहिऐ। इससे बीज की ताकत और उम्र बढ़ती है | नीम की पत्तियों का इस्तेमाल भी बहुत कारगर होता है |

पुस्तिका के इस्तेमाल का तरीका

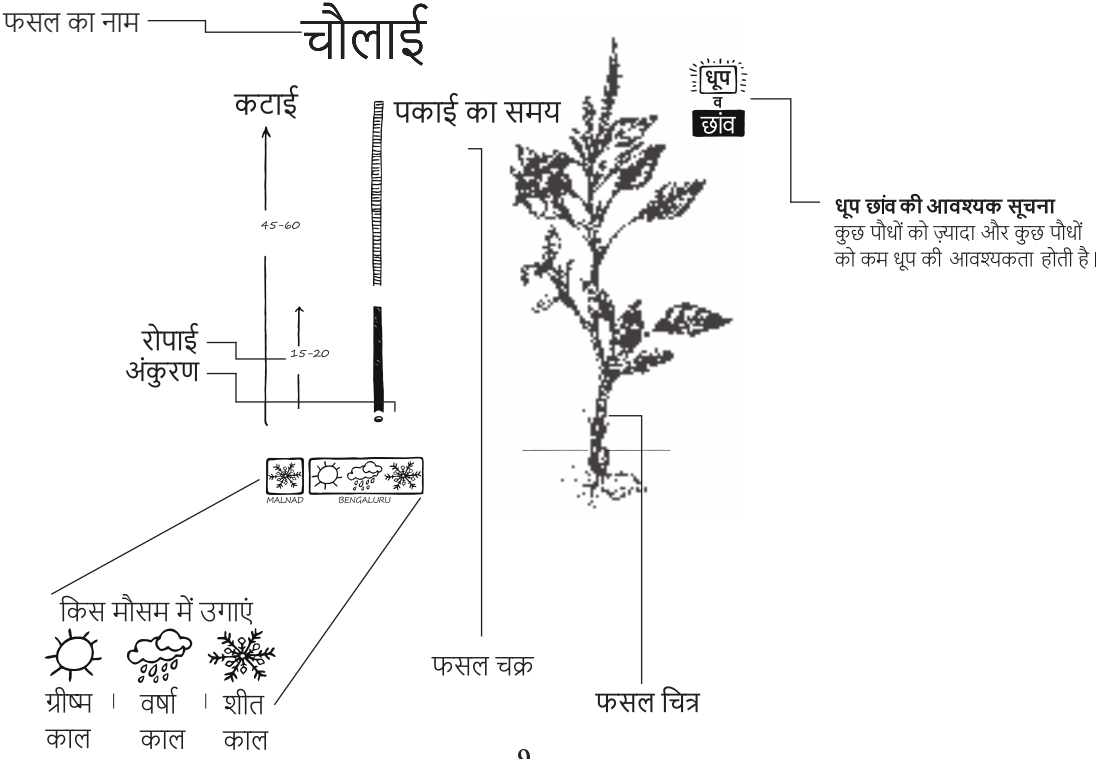

सब्ज़ियां

चौलाई

प्रकार: लाल, हल्का हरा

पकाई कटाई

उसके 45-60 दिन के अन्दर फसल की केवल पत्तियां काटी जा सकती हैं।

45-60 दिन

पकाई का समय

बीज बोने के बाद फसल तैयार होने की अवधि (90 से 120 दिन) 3-4 माह है।

15-20 दिन के अन्दर रोपाई करना

15-20 दिन

रोपाई तभी संभव है जब पौधा 4-6 इंच बड़ा हो।

बिजाई के 8 दिन बाद बीज अंकुरित होता है।

बिजाई क्यारी में

अच्छी मिट्टी और मल्चिंग पौधे को स्वस्थ रखने में सहायक हैं।

बाकला

(30 दिन वाली फली)

पकाई कटाई

40
दिन

बिजाई

एक फुट की दूरी
पर एक इंच गहरी
मिट्टी में बिजाई करें।

पकाई का समय

30-40 दिन में फसल तैयार।

4-5 दिन में बीज अंकुरित होता है।

बहुत जल्दी बढ़ती है
और प्रचलित भी है।

लंबी सेम

(अंगीकेस)

पकाई कटाई

100 दिनों में बेल (पौधा) तैयार हो जाती है।

60 दिन

बिजाई

तीन चार की कतार में 4 इंच गहरी मिट्टी में बिजाई करें।

पकाई का समय

6 महीने में फली देने लगती है।

एक सप्ताह में बीज अंकुरित होता है।

सेम (लाइमा बीन्स)

पकाई कटाई

एक पौधे में लगभग 100 फली आती हैं।

तैयार होने में 4-5 महीने का समय लगता है।

बिजाई

किसी भी दीवार या पेड़ के आस पास बिजाई हो सकती है।

पकाई का समय

7 महीने के भीतर फली आने लगती हैं।

एक सप्ताह में बीज अंकुरित होता है।

धूप

बरसात के मौसम में बिजाई होती है और लगातार देखभाल होने के चलते यह 3-4 वर्ष तक लगातार फली प्रदान करती है।

इस फली के बीज भी खाए जा सकते हैं जो कि बड़े ही स्वादिष्ट लगते हैं।

सेम (विंग्ड बीन्स)

पकाई कटाई

पकाई का समय

4 महीने बाद
फली लगना शुरू हो जाता है।

धूप

तैयार होने में 2-3
महीने का समय लगता है।

बिजाई

इसमें 4-5 बीजों
की एक साथ बिजाई
की जाती है।

एक सप्ताह के बाद
2-3 बीज साथ में
अंकुरित होते हैं।

विंग्ड फली की
बेल 5-6 वर्ष तक रहती है।

इसकी फली 5-6 इंच
लंबी होती है।

सेम (ह्यासिंथ बीन्स)

पकाई कटाई

एक पौधे में लगभग 100 फलियां आती है।

तैयार होने में 4-5 महीने का समय लगता है।

बिजाई

किसी भी दीवार या पेड़ के आस पास बिजाई हो सकती है।

पकाई का समय

7 महीने के भीतर फली आने लगती हैं।

एक सप्ताह में बीज अंकुरित होता है।

धूप

3-4 वर्ष तक फली की बेल रहती है इसके बीज भी खाए जा सकते हैं।

बैंगन

पकाई कटाई

3 माह के अन्दर बैंगन की पौध पर बैंगन लगना शुरू हो जाता है।

पकाई का समय

720 दिन

30-45 दिनों के अन्दर बैंगन की पौध का प्रत्यारोपण।

30-45 दिन

बिजाई

खाद और मिट्टी की मेंड़ बनाकर उसमें बीज की रोपाई की जाए तो बैंगन की बेहतर फसल होती है।

पौधे की ऊंचाई 2 फुट तक हो जाती है।

एक सवा हफ्ते में बीज अंकुरित हो जाता है।

धूप

एक पौधे से 2-3 वर्ष में 50-55 किलोग्राम बैंगन आसानी से प्राप्त होते हैं।

खीरा (मैगे)

पकाई कटाई

ढाई महीने बाद
खीरा लगना शुरू हो जाता है

15 दिन

बिजाई

मेंड़ बनाकर सीधा
बीजारोपण किया जाता है।

पकाई का समय

45-50 दिनों में बेल
तैयार हो जाती है।

15-20 दिन में
प्रत्यारोपण किया
जाता है इस समय
बेल की लम्बाई एक
से आधा फुट की होती है।

एक सप्ताह में
बीज अंकुरित हो जाता है।

खीरा (स्पाइनी)

पकाई कटाई

60 दिन

पकाई का समय

2 महीनों में बेल तैयार हो जाती है और पूरी तरह तैयार होने में 3 माह का समय लगता है।

एक हफ्ते में बीज अंकुरित हो जाता है।

बिजाई

सीधे बिजाई की जा सकती है। बीज की बुआई 6-8 इंच ज़मीन के भीतर करनी चाहिए।

सलाद और सब्ज़ी बनाने के लिए उपर्युक्त है। सूखे स्थान पर भी बेल 5-6 महीने तक रहती है। इसके बीजों का जूस भी तैयार किया जा सकता है जो सेहत के लिए लाभदायक होता है।

खीरा (येरे)

पकाई कटाई

पकाई का समय

2-3 महीने में तैयार।

60-90
दिन

बिजाई

7 दिन में अंकुरित होता है।

6 से 8 इंच की
दूरी पर सीधे बिजाई।

धूप

शानदार उपज के साथ
बहुत तेज़ी से बढ़ता है।

मिर्च

(प्रकार- काली, बगडी, गोकर्न, हिथालू, कुटुम्बा, लाल मिर्च, राजनेल्ली, सूजी, सान्थे)

पकाई कटाई

60 दिन

15 दिन

बिजाई

एक लाइन में 12 क्यारी बनाकर बीज बोएं।

पकाई का समय

मिर्च का पौधा 3 माह से 1 वर्ष तक मिर्च दे सकता है। मिर्च की प्रजाति और देखभाल पर भी उसकी उत्पादन क्षमता निर्भर करती है ।

रोपाई

लगभग 15 दिन बाद जब पौधे की ऊंचाई कोई 4 इंच हो जाए तब एक फूट की दूरी पर रोपाई करनी चाहिए।

धूप

मिर्च मूल रूप से दक्षिण अमरीका से आई है।

पेठा

(प्रकार- बिलि, कुम्हड़ा, गुब्बी और हशीरु)

पकाई कटाई

90-120 दिन

रोपाई

बिजाई

बरसात के दिनों में 4-5 बीज बढ़िया खाद के साथ बिजाई करें।

पकाई का समय

दो माह में बेल तैयार हो जाती है और एक वर्ष तक चलती है।

इसी दौरान जड़ों को कोई नुकसान पहुचाए बिना प्रत्यारोपण करें।

7-8 दिन में बीज अंकुरित होता है।

धूप

मवेशी इसे नहीं खाते, इसे दीवार के सहारे, पेड़ के सहारे या फैंस पर बढ़ाया जा सकता है। हर बार ताजे बीज की ही बिजाई करनी चाहिए।

करेला

(प्रकार- बिलि, गुब्बी और हशीरु)

पकाई कटाई

दो माह में करेले लगना शुरू हो जाते हैं।

बिजाई

6-8 इंच की दूरी पर बिजाई करनी चाहिए।

पकाई का समय

करीब एक वर्ष तक करेले की बेल चलती है।

एक से दो सप्ताह में बीज अंकुरित होता है।

कड़वा होने के कारण इसे मवेशी नहीं खाते और इसे दीवार या पेड़ और बाड़ के सहारे बढ़ाया जा सकता है।

लौकी (प्रकार- लम्बा और गोल)

पकाई कटाई

120 दिन

रोपाई

बिजाई

बढ़िया खाद में 4-5 बीज की बिजाई बरसात के मौसम में करनी चाहिए।

पकाई का समय

तैयार होने में 3-4 माह का समय लगता है।

इसी दौरान बिना जड़ों को नुकसान पहुंचाए प्रत्यारोपण किया जाना चाहिए।

7-8 दिन में बीज अंकुरित होता है।

इसकी सब्ज़ी बनाई जाती है, सलाद में भी इस्तेमाल की जा सकती है।

कद्दू (प्रकार- छोटी, बड़ी और मध्यम)

पकाई कटाई

एक पौधे से 8 कद्दू तक मिल सकते हैं।

90-120 दिन

रोपाई

बिजाई

गोबर खाद के साथ बीज बोएं।

पकाई का समय

3-4 माह तक इससे फल प्राप्त किए जा सकते हैं।

अगर दूसरी जगह रोपाई करनी है तो सावधानी रखें कि इसकी जड़ को नुकसान न पहुंचे।

एक सप्ताह बाद बीज अंकुरित होता है।

धूप

कद्दू, कई प्रकार के होते हैं, इसके रंग और आकार भी अलग-अलग होते हैं।
कद्दू के पौधे को ज्यादा खाद और पानी की आवश्यकता होती है।
इसे कहीं भी लगाया जा सकता है जैसे दीवार के किनारे, छत पर और खेत में।
इसके फूल भी सब्जी के तौर पर खाए जा सकते हैं।

तुरई (तोरई)

पकाई कटाई

दो से तीन महीने तक
फसल ली जा सकती है।

बिजाई

पौधे को 8 इंच की दूरी
से लाइन में लगा सकते हैं।
सीधी-आड़ी (जालीदार
लाइनों में लगा सकते हैं)।

पकाई का समय

दो माह में तैयार
हो जाता है।

इसकी बढ़वार
जल्दी होती है।

एक सप्ताह में
अंकुरित होता है।

इसे सूप, डोसा, चटनी
में इस्तेमाल किया जाता है
और सब्ज़ी बनती है।
स्वादिष्ट और पौष्टिकता से
भरपूर होती है। यह सुपाच्य है।

घीया तुरई

पकाई कटाई

2 माह में फसल
तैयार हो जाती है।

बिजाई

2-3 बीज एक साथ
बोए जा सकते हैं
इसे सहारे के लिए
लकड़ी या झाड़ी
लगा सकते हैं, जिसके
ऊपर बेल चढ़ सके।

पकाई का समय

यह पौधा 2 वर्ष तक
की अवधि के लिए होता है।

एक सप्ताह में बीज
अंकुरित हो जाते हैं।

अच्छी उपज होती है।
जब नरम हो जाए तो
इसकी सब्ज़ी बनाई जा सकती है।
जब पूरी तरह बड़ी
हो जाए तब इसका छिलका
निकाल कर सब्ज़ी बनाई जा सकती है।

भिंडी

पकाई कटाई

60
दिन

बिजाई

एक जुताई के बाद
खाद के साथ डेढ़ फुट
की दूरी पर बीजारोपण
किया जाता है।

पकाई का समय

2-3 माह में
तैयार हो जाता है।

10-12 दिन में बीज
अंकुरित होता है।

धूप

सख्त पौधा होता है।
भिंडी स्वादिष्ट और पौष्टिक
सब्ज़ियों में शुमार है।

कुलफा

पकाई कटाई

60 दिन

रोपाई

15-20 दिन

बिजाई

क्यारी में बीज का छिड़काव कर उसको खाद से ढक दिया जाता है।

पकाई का समय

दो माह से छह माह तक तैयार होता है।

पौधे में 4-6 पत्तियां हों और पौधा खड़े होने की स्थिति में हो तभी रोपाई की जानी चाहिए।

8-10 दिन में बीज अंकुरित होता है।

दो से तीन सप्ताह तक गाय का गोबर पौध में डालते रहना चाहिए।

निराई-गुड़ाई के साथ पौधा अच्छे से बढ़ता है।

यह बरसात में लगाया जाता है।

पोई (पालक)

पकाई कटाई

दो माह में
तैयार हो जाता है।

रोपाई

15-20 दिन

बिजाई

क्यारी में बीज का
छिड़काव कर उसको
खाद से ढक दिया जाता है।

पकाई का समय

पौधा दो माह में तैयार हो जाता है
और 10 माह तक रहता है।

प्रत्यारोपण के समय
पौधे पर 6-7 पत्तियां
होना जरूरी है।
एक से दूसरे पौधे
की दूरी कम से कम
16-18 इंच होनी चाहिए।
एक सप्ताह में बीज
अंकुरित होता है।

पालक, लोहा (iron) का
बहुत ही बड़ा स्रोत है।

समय-समय पर निराई-गुड़ाई
होती रहे तो यह निरंतर
बढ़ता रहता है और
केमिकल रहित होता है।

टमाटर

पकाई कटाई

पकाई का समय

ढाई माह में पौधा
तैयार होता है और लगातार
5-6 माह तक खूब
टमाटर लगते हैं।

ढाई माह में पौधा
तैयार होता है।

रोपाई

15-20 दिन में रोपाई
करनी पड़ती है।

रोपाई के लिए पौधे
की लम्बाई कम से कम
4-5 इंच होनी चाहिए
और दूरी 1 फुट के आस-पास।

बिजाई

इसके बीजों की
कहीं भी बिजाई
की जा सकती है।

7-10 दिन में बीज
अंकुरित होते हैं।

प्रत्येक पौधे को बड़ा
होने के लिए जरूरी
देखभाल की जरूरत होती है।

कंद

सामान्य तौर पर जब हम कंद की बात करते हैं तो इसका मतलब होता है कंद (आलू), प्रकंद (हल्दी व अदरक) एवं घनकंद (बंडाय व सूरन)।

सभी कंद को ज़मीन में लगाया जाता है या फिर आवश्यक आकार के बर्तन में रखा जाता है। उन्हें ज़मीन में संभाल कर संग्रहित किया जाता है।

खुले मैदान में कंद जगह के हिसाब से बढ़ सकते हैं, ये घेरा बनाकर ऊंचाई की ओर जा सकते हैं।

वहीं कुछ खास कंद को एक बार के आधार पर ही लगाया जाता है।

अरारोट

पकाई कटाई

6 माह में तैयार होता है।

बिजाई

सीधे क्यारी में बिजाई के बाद खाद से ढक दिया जाता है।

15 दिन में अंकुरित होता है।

छांव

कड़वाहट मिटाने के लिए तीन दिन तक पानी में रखना चाहिए। सूखे कंद को बाल-आहार के तौर पर भी उपयोग में लिया जा सकता है।

अरबी

पकाई कटाई

6 माह में तैयार होता है।

बिजाई

एक फुट गहरी मुलायम
मिट्टी की पाल बनाकर
सीधे बोया जाता है।
जिसमें गोबर खाद
और राख को मिलाया जाता है।
साथ में निरंतर निराई-गुड़ाई
की आवश्यकता होती है।

15 दिन में
अंकुरण होता है।

छांव

अरबी की कई
प्रजातियां होती हैं
जिसमें 5 फुट लंबी
तक भी होती हैं।
अरबी की प्रजाति
पर तय होता है कि
उसकी बिजाई कैसे करनी है।
उबालकर सब्ज़ी बनाई जाती है।

इसकी पत्तियों को बेसन के
साथ लपेटकर सब्जी भी बनाई जाती है।

रतालू

पकाई कटाई

तैयार होने में
एक साल लगता है।

बिजाई

एक दो फुट गहरी,
मुलायम मिट्टी की क्यारी में
सीधे बिजाई की जाती है।
जिसमें खाद और
राख को मिलाया जाता है।
साथ में निरंतर निराई-गुड़ाई
की आवश्यकता होती है।

दो सप्ताह में
अंकुरण होता है।

छांव

बार-बार फल लिया
जा सकता है।
सब्ज़ी व सांबर में
प्रयोग किया जा सकता है।

अदरक

पकाई कटाई

6 माह में तैयार होता है।

बिजाई

6 इंच गहरी मुलायम मिट्टी की क्यारी में सीधे बिजाई की जाती है। जिसमें खाद और राख को मिलाया जाता है। साथ में निरंतर निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है।

पकाई का समय

सालों साल चलता है।

दो सप्ताह में अंकुरण होता है।

धूप

व

छांव

टुकड़ों में निकाल सकते हैं और इसका उपयोग कई प्रकार से किया जाता है (जैसे चाय, अचार, सब्ज़ियों आदि) यह बहुत ही सुपाच्य होता है।

आम अदरक

पकाई कटाई

पकाई का समय

सालों साल चलता है।

6 माह में तैयार होता है।

बिजाई

6 इंच गहरी मुलायम
मिट्टी की क्यारी में
एक फुट की दूरी पर सीधे
बिजाई की जाती है।
जिसमें खाद और
राख को मिलाया जाता है।
साथ में निरंतर निराई-गुड़ाई की
आवश्यकता होती है।

दो सप्ताह में
अंकुरण होता है।

धूप
व
छांव

यह अदरक की
दूसरी प्रजाति है
जो चटनी और
अचार के लिए
प्रयोग में लिया जाता है।

शकरकंद

पकाई कटाई

पूर्णरूप से तैयार होने में
6 माह का समय लगता है।

बिजाई

एक फुट की दूरी और
एक फुट गहरी में सीधे
तौर पर बिजाई की जाती है।
अच्छे उत्पादन के लिए खाद
और मुलायम मिट्टी का
उपयोग बेहतर रहता है।

जड़ों को बढ़ने में 15
दिन का समय लगता है।

धूप
व
छांव

शकरकंद ज़मीन के
भीतर तैयार होता है और
इसको उबाल कर नींबू
नमक लगाकर खा सकते हैं।
सब्ज़ी भी बनाई जा सकती है।

कसावा

पकाई कटाई

आठ माह में
तैयार होता है।

बिजाई
प्रत्यारोपण सीधे तौर
पर किया जाता है
निराई-गुडाई के साथ।

जड़ें 15 दिन में अपना
आकार बनाती हैं।

धूप
व
छांव

ज्यादा देखभाल की ज़रूरत नहीं है।
फसल लेने के एक सप्ताह
बाद पौधे में फिर से कसावा
मिट्टी / ज़मीन में अच्छी तरह
से संग्रहित होने लगता है।

हल्दी

पकाई कटाई

10 माह में तैयार होती है।

बिजाई

6 इंच गहरी मुलायम मिट्टी और खाद की क्यारी में सीधे बिजाई की जाती है।
भुरभुरी मिट्टी और गोबर खाद के साथ इसे लगा सकते हैं।

15 दिन में अंकुरण होता है

धूप
व
छांव

हल्दी आयुर्वेद का वरदान और प्राकृतिक औषधि है। ज़मीन से बाहर निकालने के बाद इसे सुखाया जाता है। मसाले के रूप में इसका सबसे ज्यादा उपयोग होता है। इसका अचार भी बनाते हैं। सौन्दर्य प्रसाधनों को तैयार करने में भी इसका बहुत इस्तेमाल किया जाता है।

जिमीकंद/अरुई

पकाई कटाई

6 माह में तैयार हो जाता है।

बिजाई

खाद और मिट्टी के साथ सीधे तौर पर बिजाई की जाती है।

अंकुरण 15 दिन में होता है।

छांव

भून कर और उबाल कर खाया जा सकता है।

जिमीकंद 2

पकाई कटाई

8 माह में तैयार हो जाता है।

बिजाई

खाद और मिट्टी के साथ सीधे तौर पर बिजाई की जाती है।

अंकुरण 15 दिन में होता है और यह मौसम पर निर्भर करता है।

छांव

भून कर और उबाल कर खाया जा सकता है।

फूल

मोखा/ गुल मेहेंदी/ तिउरी

पकाई कटाई

पकाई का समय

दो माह में तैयार हो जाता है।

60 दिन

रोपाई

15 दिन

दो सप्ताह बाद लगभग 3 इंच की लम्बाई होने पर रोपाई की जाती है।

बिजाई

एक सप्ताह में अंकुरण होता है।

क्यारी में बीजों का छिड़काव करना चाहिए।

अपराजिता

पकाई कटाई

3 माह में तैयार
हो जाता है।

बिजाई

क्यारी में सीधे
बिजाई की जाती है।

पकाई का समय

बारहमासी है और लगातार
फूल लगते रहते हैं।

8-10 दिन में बीज
अंकुरित हो जाता है।

फूल औषधीय, रस बनाने
और धार्मिक अनुष्ठानों में
प्रयोग किया जाता है।

केली- वैजयंति के फूल

पकाई कटाई

3 माह में तैयार
हो जाता है।

बिजाई
क्यारी में सीधे
बीजा रोपण।

पकाई का समय

बारहमासी है और लगातार
फूल लगते रहते हैं।

10 दिन में बीज
अंकुरित हो जाता है।

धूप
व
छांव

जहां पानी का रुकाव
होता है वहां यह फूल उगता है।

ब्रह्मांड (कॉसमॉस)

पकाई कटाई

45 दिन

रोपाई

15 दिन

बिजाई

मिट्टी की क्यारी में बीजों को तितर-बितर करके बिजाई करनी चाहिए।

पकाई का समय

1-2 माह तैयार होने में लगते हैं।

15 दिन बाद प्रत्यारोपण किया जा सकता है।

8-10 दिन में अंकुरित हो जाता है।

इनकी खासियत है कि ये स्व-बीजण करते हैं। आप कॉसमॉस वाले पौधों की स्थायी क्यारी बना सकते हैं।

चार बजे

(फोर ओ'क्लॉक फ्लॉवर)

पकाई कटाई

९०
दिन

बिजाई

क्यारी व गमले में
बिजाई की जा सकती है।

पकाई का समय

तीन महीने में तैयार
होता है 6 माह
तक रहता है।

अंकुरित होने में 10
दिन का समय लगता है।

धूप
व
छांव

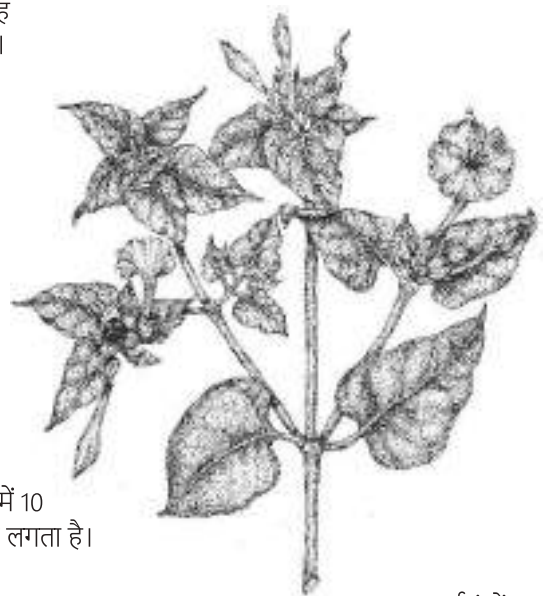

कई रंगों का होता है।

गेंदा

पकाई कटाई

दो माह में तैयार
हो जाता है।

रोपाई

15 दिन

बिजाई

क्यारी की एक बार जुताई
करके उसमें बीजों का
छिड़काव करना होता है।

पकाई का समय

दो माह में तैयार
हो जाता है।

पौधे के बीच 6 इंच
की दूरी रखनी होती है।

एक सप्ताह में बीज
अंकुरित होता है।

15 दिन बाद पौध को
निकाल कर उपयुक्त
स्थान पर लगाना होता है।

फूल और पत्तियों में
कीटनाशक गुण होते हैं।

ज़ीनिया

पकाई कटाई

2 माह में तैयार
हो जाता है।

रोपाई

15 दिन

बिजाई

क्यारी में सीधे बिजाई।

पकाई का समय

दो माह में तैयार
हो जाता है।

15 दिन बाद प्रत्यारोपण
करना होता है
उस समय पौध में 4
पत्ते कम से कम होने चाहिए।

8-10 दिन में बीज
अंकुरित हो जाता है।

धूप
व
छांव

ज़ीनिया के फूल कई
रंगों के होते हैं और
लंबे समय तक रहते हैं।

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी